समेकित मत्स्य पालन पर प्रशिक्षण प्रारम्भ

पंतनगर। 26 अक्टूबर, 2009। मत्स्य महाविद्यालय में आज छः–दिवसीय समेकित मत्स्य पालन प्रशिक्षण का शुभारम्भ हुआ। इस प्रशिक्षण का आयोजन राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड के सौजन्य से किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति डा. बी.एस. बिष्ट उद्‌घाटन सत्र के मुख्य अतिथि थे।

डा. बिष्ट ने अपने उद्‌घाटन भाषण में समेकित मत्स्य कृषि पर प्रकाश डालते हुए इसे आज की एक मुख्य आवश्यकता बताया। उन्होंने कहा कि सीमित संसाधनों को देखते हुए यह आवश्यक हो गया है कि संसाधनों का सबसे बेहतर इस्तेमाल किया जाये। इसी को देखते हुए कृषि में विविधीकरण का महत्व हाल के सालों में काफी बढ़ा है। उन्होंने अपशिष्ट (बेकार) को पोषक तत्वों के रूप में परिवर्तित कर उपयोग में लाये जाने के महत्व को उदाहरण द्वारा समझाते हुए इस पर विस्तृत चर्चा की। डा. बिष्ट ने मत्स्य पालन में आने वाली समस्याओं का जिक्र किया और कहा कि इन सब के समाधान के लिए समेकित मत्स्य पालन आवश्यक है। अब मत्स्य पालन केवल धरेलू उपक्रम ही नहीं रह गया है, बल्कि यह तकनीक–आधारित एक व्यावसायिक उपक्रम हो गया है।

निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. के.आर. कनौजिया ने भी सभी आगन्तुकों को सम्बोधित किया तथा समेकित मत्स्य पालन को सभी प्रकार के किसानों के लिए अतिरिक्त आय का सशक्त श्रोत बताया। इससे पूर्व डा. यू.पी. सिंह, महाविद्यालय के कार्यवाहक अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष, एक्वाकल्चर ने अपने सम्बोधन में कहा कि असम जैसे कुछ राज्यों में समेकित मत्स्य पालन पर काफी अच्छा काम हो रहा है जिसका और अधिक प्रचार–प्रसार कर इसे लोगों की आवश्यकता अनुसार उपयोगी बनाया जाना चाहिए। कार्यक्रम के समन्वयक डा. आर.एस. चौहान ने प्रशिक्षण के उद्‌देश्य के बारे में बताते हुए कहा कि संसाधनों के उचित इस्तेमाल के लिए इस प्रशिक्षण का आयोजन किया जा रहा है। प्रशिक्षण में देश के 8 राज्यों, यथा मणिपुर, असम, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगण, अरूणाचल प्रदेश, झारखण्ड एवं उत्तराखण्ड से 30 प्रतिभागी आये हुए हैं। इनके अतिरिक्त कुछ बैंक अधिकारी तथा उद्यमी भी सम्मिलित हो रहे हैं जिससे विषय के महत्व को सभी सम्बन्धित लोग अच्छी तरह समझ सकें। इस छः–दिवसीय प्रशिक्षण में समेकित मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी दी जायेगी जिसमें प्रमुख रूप से डेयरी–मत्स्य पालन, मछली के रोग, स्थान का चयन एवं नियोजन, कुक्कुट. मछली पालन, सूकर–मछली पालन आदि विषयों को चुना गया है। कार्यक्रम का संचालन डा. मल्लविकादास ने किया।

प्रशिक्षण के उद्घाटन सत्र में मंचासीन डा. बी.एस. बिष्ट (बायें से दूसरे) एवं अन्य वैज्ञानिक